क्षमा वीरस्य भूषणम्

क्षमावाणी का दिन पयूर्षण पर्व के कलशारोहण का दिन है । मंदिर कितना भी सुंदर बना हो उस मंदिर का शिखर भी कितना ही सुंदर बना हो पर उसमे कलश न लगे तो वह सुंदर नही दिखता । उसकी सुंदरता के अभाव में उसकी महत्ता कम हो जाती है । उसी प्रकार हम इस जीवन में व्रत, नियम, उपवास, संयम,स्वाध्याय सभी का पालन करें पर मन में क्षमा करने व मांगने का भाव उत्पन्न नहीं हुआ तो जीवन में धारण किये हुए व्रतों का महत्व व सुंदरता कम हो जाती है । क्षमा के अभाव में जीवन अधूरा हैं ।

लेकर क्षमा सिंधु का पानी क्रोधकचि घोलो ।
आओ इस पावन पर्व में गांठ हृदय की खोलो ।

यह क्षमावाणी पर्व आत्म शुद्धि का पर्व है । जैन धर्म में इस पर्व की ऐसी ही महिमा है । इसकी नींव भी क्षमा धर्म से रखी गई, और इसका कलशारोहण भी क्षमावाणी से किया गया है । यानि कि जहां क्षमा करना और क्षमा मांगना दोनो कार्य हो जावें, वही से मुक्ति के मार्ग का उद्घाटन होता है ।दस दिनों में मन कुछ हल्का होता है,मन की मलीनता घटती है तभी हम क्षमा मांगने को एकत्रित होते हैं ।

संसार में शायद ही कोई ऐसा इंसान हो जिसने कभी कोई गलती न की हो । गलती करना मनुष्य का स्वभाव है। न चाहते हुए भी कोई न कोई गलती अवश्य हो जाती है । गलती का होना दुर्भाग्य नही है, गलती स्वीकार न करना दुर्भाग्य है । गलती करने के बाद उसे छुपाना मूर्खता है । अपनी गलती पर लीपा पोती करके उसे सही ठहराना अपराध है । गलती मानकर उसे सुधारना व भविष्य में सुधरना यह महानता है। वही क्षमा है, यह वीरों का आभूषण है ।

जो गलती न करे उसे भगवान कहते हैं ।
जो गलती कर गुजरता है उसे इंसान कहते है।।
जो गलती करके न माने उसे हैवान कहते हैं ।
जो गलती पर करे गलती उसे शैतान कहते है ।।

आदमी की सबसे बड़ी कमजोरी है कि वह अपनी गलती को गलती माननें में अपना अपमान समझता है और कदाचित वही गलती दूसरे से हो जावे तो नमक मिर्च लगाकर उसका उपहास करते है । यही भाव तो बैर, वैमनस्य, द्वंद, ईर्ष्या बढ़ाने में कारण होता है। एक गलती की चिंगारी महाविनाश का कारण बन जाती है । यदि जीवन में किसी बात को लेकर मन मुटाव हो, मतभेद हो, परिवार में, समाज में विघटन हो, कोर्ट कचहरी की नींव डले, धन की बर्बादी हो उसके पूर्व क्षमावाणी को स्वीकार कर लेना । मत सोचना कि लोग मुझे डरपोक कहेंगे । ऐसा व्यर्थ का सोच ही तपन का द्वार खटखटाता है ।

जिसके जीवन में कषायों का तूफान उठ रहा है, कषायों की आग जल रही है, उसके जीवन में क्षमा प्रगट नही हो सकती है । क्षमावाणी का पर्व सौहार्द, सौजन्यता, सद्भावना का पर्व है । जाने अनजाने में हुये अपराध व गलती के प्रति पश्चाताप का भाव रखते हुये मनोमालिन्य दूर करने की भावना इस पर्व का प्रयोजन है। चिरकालीन कषाय रुपी फोडे के ऑपरेशन का दिन है, आपरेशन कर लेना । किसी के मन में कही भी फोडा हो उसके राग–द्वेष की मवाद को निकाल देना चाहिये।

मनुष्य जन्म बैर बांधने के लिये नही मिला है । बैर दूर करने के लिये मिला है ।

यह बैर महादुख दाई है, यह बैर न बैर मिटाता है ।
यह बैर निरंतर प्राणी को व्याकुल कर भटकाता है ।

ऋण को थोड़ा, घाव को छोटा, आग को तनिक, कषाय को अल्प मानकर निश्चित होकर नही बैठ जाना चाहिये । क्योकि ये थोड़ा–थोड़ा बढ़कर बहुत हो जाते है।

फोडे को भी कम मत समझना । फुंसी है तो मवाद बाहर निकाल दें । अन्यथा छोटी सी फुंसी भी नासूर बन जाती है।

जबतक कटु व्यवहार की स्मृति मन में बनी रहेगी तब तक प्रेम की धारा बहना असंभव है । आजकल लोग क्षमा भी उनसे मांगते है जिनसे लड़ाई नही है। मित्रों से मांगते हैं । अरे भाई क्षमा मांगना हो तो उस भाई से मांगो जिससे वर्षो से आपकी बोलचाल नही हैं ।

कषायों से संस्कारित हमारा चित्त होगा तो तब तक धर्म नही होगा ।

अनजाने में बिन चाहे भी भूल हो सकती है।
जीवन के क्रूर पलों में बुद्धि हमारी सो सकती है।।
ऐसे कुछ अनजान पलों की क्षमा नम्र भाव से मांगते हैं ।
क्षमा पर्व पर क्षमा दान दें कलुष हृदय का साफ करें ।।

– राजेन्द्र कुमार जैन 'सायकल वाले', प्रबंध संपादक

विवाह योग्य युवक युवती परिचय विशेषांक दिसम्बर 2016 में

गतवर्ष सिद्धक्षेत्र पवाजी मेले में गोलालारीय दर्शन की प्रथम विवाह योग्य परिचय पुस्तिका 'प्रयास' का विमोचन किया गया था । हमारा यह प्रयास काफी सराहनीय रहा । इस वर्ष भी विभिन्न नगरों से इस पुस्तिका के प्रकाशन की जानकारी चाही गयी । गोलालारीय दर्शन के माध्यम से हमारा सदैव यही प्रयास रहा है कि समाजजनों को सामाजिक व अन्य जानकारियां सहज ही उपलब्ध करा सके । हमनें इस माध्यम को कभी भी आय का साधन नहीं माना है । गत 7 वर्षों से गोलालारीय दर्शन पत्रिका निरंतर वित्तीय घाटे सहन करने के पश्चात भी पत्रिका के 5–6 अंक प्रतिवर्ष 4200 परिवार को निरंतर प्रेषित किये जा रहे है । यहां खेदपूर्वक कहना पड़ता है कि इन 4200 परिवारों में से मात्र 62 परिवारों ने ही 2000 रुपये से अधिक की राशि का सहयोग देकर सदस्य बने है जबकि आप सभी जानते है कि आज हमारे समाज में एक से बढ़कर एक धनाढ्य लोग है जो मांगलिक एवं धार्मिक कार्यों में लाखों रुपये खर्च कर देते है । आपको कभी भी महसूस हो कि गोलालारीय दर्शन समाज के लिए उपयोगी है तो आर्थिक सहयोग प्रदान कर हमारा संबल अवश्य बढ़ाये । हमें सदैव आपके सहयोग का इंतजार रहेगा । जहां धर्म के लिए लाखों रुपये दे रहे है वहां पर अपनी समाज की एक अच्छे प्रयास के लिए हजारों रुपये देकर आर्थिक संबल प्रदान करेंगे तो आने वाली पीढ़ियां सदैव आपको सदैव याद करेगी । हम समाज के समस्त परिवारो को फिर भी निरंतर अंक भेजने का प्रयास करते रहेंगे । गोलालारीय दर्शन के विवाह योग्य युवक युवती के प्रथम अंक **'प्रयास'** की उपलब्धियों को ध्यान में रख यह निर्णय लिया है कि प्रयास पुस्तिका एक वर्ष छोड़कर प्रकाशित किया जावेगी ताकि समाजजनों को नवीन प्रत्याशियों की जानकारी उपलब्ध हो सके । **इसी तारतम्य में वर्ष दिसम्बर 2016 का अंक हमारा विवाह योग्य युवक युवती परिचय विशेषांक होगा, जिसका प्रारुप अंतिम पेज पृष्ठ क्रमांक 12 पर प्रकाशित है ।**

प्रविष्टी सशुल्क 250 रुपये (चेक या नगद) यदि आप अपने शहर की शाखा में प्रविष्टी शुल्क जमा करते है तो 300 रुपये प्रति प्रविष्टि शुल्क के साथ प्रविष्टि 10 नवम्बर 2016 तक हमारे कार्यालय 16, महारानी रोड़, या 64 न्यू देवास रोड़, इन्दौर पर भेज सकते है व आपके नगर के स्थानीय प्रतिनिधि के साथ या वाट्सएप्प सुविधा नंबर 9407453066 व हमारे ईमेल golalariya.darshan@gmail.com पर बायोडाटा प्रारुप बैंक में जमा रसीद के साथ भेज सकते है । अंक की प्रति आपको मधुर कोरियर/स्पीड पोस्ट से निश्चित रुप से भेजी जावेगी । **गोलालारीय संचार सेवा का वाट्सएप्प नंबर 9407453066 चर्चा हेतु उपलब्ध नहीं है ।** संपर्क सूत्र – राजेन्द्र जैन 9424013136, बाहुबली जैन 9405903301, कोमलंचद जैन 9329524227।

कृपया काटकर भेजें — कृपया काटकर भेजें

गोलालारीय दर्शन – 64, न्यू देवास रोड, इन्दौर

*** सदस्यता आवदेन पत्र ***

सदस्यता क्रं. ..... (आपको पते के स्टीकर पर अंकित क्रं. लिखे)

नाम (पिता के नाम सहित) _____

_____

डाक पूर्ण पता _____

_____

_____ **पिन कोड** | | | | | | |

फोन/मोबाइल नं. _____

सामाजिक संस्थाओं में भागीदारी की जानकारी _____

_____

_____

नोट – यदि आपका बैंक खाता भारतीय स्टेट बैंक में है तो आप सदस्यता राशि का चेक काटकर गोलालारीय दर्शन के बैंक खाते में अपनी ही शाखा में जमा करावें ताकि अनावश्यक बैंक शुल्क न लगे । अन्य बैंको से राशि भेजने वाले चेक/डी.डी द्वारा राशि जमा करावें । विवरण नीचे दिया गया है –

प्रविष्टि पंजीयन राशि जमा करने हेतु आप अपना ड्राफ्ट/मल्टीसिटी चैक इस नाम से भरे –

हिन्दी में – ''गोलालारीय दर्शन'' इन्दौर

अंग्रेजी में – "GOLALARIYA DARSHAN", Indore

प्रविष्टि पंजीयन राशि आप हमारे बैंक एकाउंट में जमा भी कर सकते हैं तथा रसीद की फोटोकॉपी फार्म के साथ अनिवार्य रुप से भेजे ।

* बैंक का नाम – स्टेट बैंक ऑफ इंडिया
* खाता क्रमांक – 63048875855
* IFSC code : SBIN0030134
* ब्रांच – नगर निगम शाखा, इन्दौर

प्रविष्टि शुल्क ₹ 250/-

SBI बैंक की अन्य शाखा में नगद राशि बैंक में जमा करने पर ₹ 300/-

ईमेल golalariya.darshan@gmail.com